डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 01/07/2020

विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

कादम्बरी - शुकनासोपदेश - बाणभट्ट

गद्यांश व्याख्या

अजस्त्रमक्षपावसान प्रबोधा घोरा च राज्यसुख-सन्निपात निद्रा भवतीति विस्तरेणाभिधीयसे। गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्व मप्रतिमरूपत्वममानुष-शक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा। सर्वा-विनयानामेकैकमप्येषा मायतनम्, किमुत समवायः।

सान्वय व्याख्या — (राज्यसुख सन्निपात निद्रा) राज्यसुख समूह से उत्पन्न निद्रा (अजस्र-मक्षपावसानप्रबोधा घोरा च भवति) सदा ऐसी घोर होती है कि रात्रि की समाप्ति पर भी जागा नहीं जा सकता। (विस्तरेण) इसलिए मैं तुम्हें विस्तार से (अभिधीयसे) कह रहा हूँ। (गर्भेश्वरत्वम्) जन्मजात प्रभुता, (अभिनवयौवनत्वम्) नवयौवन, (अप्रतिमरूपत्वम्) अद्वितीय सौन्दर्य, (अमानुषशक्तित्वञ्च) और अतिमानुषी शक्ति सम्पन्नता (महतीयं खल्वनर्थपरम्परा च) यह सब निश्चय ही अनर्थों की बहुत बड़ी शृंखला है। (एषामेकैकमपि) इनमें से एक-एक अकेला भी (सर्वाविनयानामायतनम्) सभी धृष्टताओं का निवासस्थान है, (किमुत समवायः) फिर इनके समूह का तो कहना ही क्या।

Scanned with CamScanner

भावार्थ – राज्यसुख-समूह से उत्पन्न निद्रा निरन्तर ऐसी घोर होती है कि रात्रि की समाप्ति पर भी जागा नहीं जा सकता। अतः मैं तुम्हें विस्तारपूर्वक कह रहा हूँ। अथवा विस्तारपूर्वक कहे जाते हो। जन्मसिद्ध ऐश्वर्य, अभिनव यौवन, अनुपम सौन्दर्य और अलौकिक शक्ति - ये सब अनर्थ के हेतु हैं किन्तु इन्हें ही अनर्थशृंखला कहा गया है। इनमें से एक-एक भी सब अविनयों का निवास है, इनके समूह का तो कहना ही क्या।

टिप्पणी – अक्षपावसानप्रबोधा – क्षमायाः अवसानं क्षपावसानं (ष० तत्पु०) क्षपावसाने प्रबोधः (प्र+बुध्+घञ्) यस्याः सा क्षपावसानप्रबोधा (बहु०) न क्षपावसान०...(नञ्) रात समाप्त होने पर भी जागरण न होनेवाली। राज्यसुखसन्निपातनिद्रा - राज्यसुखम् एव सन्निपात निद्रा सन्निपातज्वरः तद्वत् प्राणहानिकरी निद्रा (क०धा०) अभिधीयसे – अभि + धा + यक् (कर्मणि) लट् म०पु० ए०। गर्भेश्वरत्वम् – गर्भाद् ईश्वरत्वम् (पं० तत्पु०)। अभिनवयौवनम् – यूनः भावः यौवनम्, अभिनवं यौवनं यस्य सः अभिनवयौवनः (बहु०) तस्य भावः अभिनवयौवनत्वम्। अप्रतिमरूपत्वम् – अविद्यमाना प्रतिमा यस्य तद् अप्रतिमम् (नञ्) अप्रतिमं रूपं यस्य स अप्रतिमरूपः (बहु०) तस्य भावः। अमानुषशक्तित्वम् – मनुष्यस्य इयं मानुषी, मानुषी चासौ शक्तिः मानुषशक्तिः (क०धा०) नास्ति मानुषशक्तिः यस्मिन् स अमानुषशक्तिः (नञ्) तस्य भावः अमानुषशक्तित्वम्। इति।